'यह तो अमरीकी है': चीफ की दावत

डॉ. विभा कुमारी

एसोसिएट प्रोफेसर

कल्याणी विश्वविद्यालय

नदिया, पश्चिम बंगाल

सारांश

भूमंडलीकरण की इस संस्कृति के फलस्वरूप भारत के महानगरों में एक ऐसा वर्ग उभर कर सामने आया है, जो भारत के आम जन की तुलना में स्वयं को अमेरिका में निवास कर रहे लोगों के ज्यादा करीब महसूस करता है। वे अमेरिकन जीवन-मूल्य, जीवन-दृष्टि, जीवन-शैली को अपना रहे हैं, जिससे भारतीय समाज की बुनियादी आस्था एवं आधार को गहरा झटका लगा है। परिवार और पारिवारिक संबंधों में आए परिवर्तन ने भारतीय समाज में एक अभूतपूर्व संकट पैदा कर दी है। एक महत्वपूर्ण रचनाकार की विशेषता इस बात में हैं कि वह अपनी रचनाओं के माध्यम से इस संकट से समाज को आगाह कराये। 1956 में लिखी 'चीफ की दावत' कहानी में ही भीष्म साहनी ने भूमंडलीकरण के परिणामस्वरूप सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में आने वाले बदलावों का पूर्व संकेत दे दिया था।

मुख्य शब्द

वसुधैव कुटुंबकम्, भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण, अनुगामी, सांस्कृतिक, प्रवासी, व्यक्तिवाद, मध्यवर्ग, दावत, व्यापारी, कलाप्रेमी, तकनीक।

अध्ययन का उद्देश्य

इस लेख को पढ़ कर भूमंडलीकरण के फलस्वरूप अमेरिकी आकर्षण में बद्ध मध्यवर्ग के जीवन-मूल्य, जीवन-दृष्टि और जीवन-शैली में आए बदलावों से परिचित हो सकेंगे। साथ ही इस बाट से परिचित हो सकेंगे कि अमेरिका किस तरह विकासशील देशों के कच्चे माल और तकनीक को हड़प कर विश्व में सबसे ताकतवर देश बना हुआ है।

प्रस्तावना

'वसुधैव कुटुंबकम्' भारत की एक दार्शनिक आत्म अभिव्यक्ति मात्र नहीं है। सिंधु घाटी सभ्यता की प्राचीन परंपरा की साक्षी है कि भारत वैश्वीकरण की भावना का प्राचीन अनुगामी रहा है। "सैंधवों का भारतीय प्रदेशों के अतिरिक्त विश्व के अन्य कई देशों के साथ भी व्यापारिक एवं सांस्कृतिक संबंध था। मध्य एशिया, फ़ारस की खाड़ी के देशों - उत्तरी पूर्वी अफ़ग़ानिस्तान।"[1], ईरान, बहरीन द्वीप, मेसोपोटामिया, रोम, चीन और दक्षिण पूर्व एशिया (इंडोनेशिया, थाईलैंड) के साथ भारत ने घनिष्ठ व्यापारिक संबंध स्थापित कर रखे थे। ए.एल. वाशम 'वंडर दैट वाज इंडिया' में लिखते हैं कि "प्रवासी और व्यापारी भारत में आते रहे और भारतीयों ने भी व्यापार और संस्कृति का विस्तार अपनी सीमाओं से बाहर किया।"[2] विश्व की प्राचीनतम सभ्यता एवं संस्कृति में से एक भारतीय संस्कृति परिवर्तन की कई थपेड़ों से जूझती और निखरती रही है। समयांतर में विभिन्न कारकों एवं कारणों ने इसके समक्ष नई चुनौतियां पैदा की हैं, ऐसे ही 21वीं सदी में भूमंडलीकरण ने भारत को एक नए सांस्कृतिक दोराहे पर खड़ा कर दिया है। भूमंडलीकरण का मौजूदा मॉडल सांस्कृतिक विविधता को अस्वीकार करता है। इसका मुख्य आग्रह अमेरिकीकरण का प्रतीत होता है, जो समूचे विश्व पर अमेरिकी-जीवन-शैली व मूल्यों को थोपने का प्रयास करता है। थॉमस एल. फ्रीडमैन ने न्यूयॉर्क टाइम्स में घोषित किया था – "हम अमेरिका तेज दुनिया के प्रचारक हैं, मुक्त बाजार के मसीहा हैं और उच्च तकनीक के वाहक।"[3]

भूमंडलीकरण की इस संस्कृति के फलस्वरूप भारत के महानगरों में एक ऐसा वर्ग उभर कर सामने आया है, जो भारत के आम जन की तुलना में स्वयं को अमेरिका में निवास कर रहे लोगों के ज्यादा करीब महसूस करता है। वे अमेरिकन जीवन-मूल्य, जीवन-दृष्टि, जीवन-शैली को अपना रहे हैं, जिससे भारतीय समाज की बुनियादी आस्था एवं आधार को गहरा झटका लगा है। परिवार और पारिवारिक संबंधों में आए परिवर्तन ने भारतीय समाज में एक अभूतपूर्व संकट पैदा कर दी है। एक महत्वपूर्ण रचनाकार की विशेषता इस बात में हैं कि वह अपनी रचनाओं के माध्यम से इस संकट से समाज को आगाह करायें।

भीष्म साहनी हिंदी के महत्वपूर्ण कथाकार हैं। ऐसे महत्वपूर्ण कथाकार की कथा-कृतियों को बार-बार और अलग-अलग कोणों से देखने-परखने की जरूरत हुआ करती है। भीष्म साहनी उन थोड़े से कथाकारों में हैं जिनके माध्यम से हम अपने समय की नब्ज़ पर भी हाथ रख सकते हैं और उनके समय की छाती पर कान लगाकर उनके समय के दिल की धड़कनों को भी साफ़-साफ़ सुन सकते हैं। कहानी के संबंध में भीष्म साहनी का कहना है – "कहानी का सबसे बड़ा गुण उसकी प्रामाणिकता ही है। उसके अंदर छिपी सच्चाई जो हमें जिंदगी के किसी पहलू की सही पहचान कराती है और यह प्रामाणिकता उसमें तभी आती है जब वह जीवन के अंतर्द्वंद्व से जुड़ती है, तभी वह जीवन के यथार्थ को पकड़ पाती है। कहानी का रूप सौष्ठव, उसकी संरचना, उसके सभी शैलीगत गुण, इस एक गुण के बिना निरर्थक हो जाते हैं। कहानी जिंदगी पर सही बैठे यही सबसे बड़ी माँग हम कहानी से करते हैं।"[4] भीष्म साहनी की कहानियां अपने समय और आने वाले समय की सच्चाइयों से हमें रू-ब-रू कराती है। 1956 में लिखी 'चीफ की दावत' कहानी में ही उन्होंने भूमंडलीकरण के परिणाम स्वरूप सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में आने वाले बदलावों का पूर्व संकेत दे दिया था।

विषय-विस्तार

आज समाज का स्वरूप वैसा ही नहीं रह गया है जैसा कि आज से 100 वर्ष पहले था। सामाजिक जीवन में बड़ी तेजी से बदलाव आ रहा है। सामाजिक विकास के साथ-साथ मनुष्य का मन भी बदलने लगा है। इस बदलाव के कारण त्याग और बलिदान के बदले जीवन में लोभ और भोग का व्यक्तिवादी वर्चस्व बढ़ने लगा है। व्यक्तिवाद का दबाव जितना बढ़ने लगा, व्यक्तित्व का प्रसार उतना ही संकुचित होने लगा है। सामाजिक दृष्टि से यह शुभ लक्षण नहीं माना जा सकता है। आधुनिक विकास की संरचना का स्वरूप पिरामिड की तरह बना। इस विकास में 'एक के साथ एक' नहीं 'एक के ऊपर एक' के विकास का ही ढांचा बनता है। पढ़े-लिखे लोगों में एक विचित्र किस्म की आपा-धापी शुरू हो गई है। सबके साथ नहीं सबके आगे निकल जाने की होड़ लगी हुई है। इस होड़ में पढ़े-लिखे लोग तो सबसे आगे हैं। जो जितना पढ़ा लिखा है वह इस आपाधापी को बढ़ाने में उतना ही आगे है। 'चीफ की दावत' कहानी में शामनाथ के माध्यम से लेखक इस मध्यवर्ग के चरित्र को हमारे सामने रखते हैं। तरक्की चाहना मनुष्य मात्र का स्वभाव है। जिस हालत में वह है, उससे बेहतर की कामना करता है, इस कामना की पूर्ति हालात से संघर्ष करने से होती है। शामनाथ और उनके जैसे दूसरे 'देसी अफसर' संघर्ष के मार्ग को न अपना कर चीफ को खुश करने का गलत और आसान रास्ता चुनते हैं। चीफ को खुश करने की 'देसी अफसरों' में होड़ है। "साहब को खुश रखूंगा तो कुछ करेगा वरना उसकी खिदमत करने वाले और थोड़े हैं ?"[5] दावत के द्वारा खुश करके तरक्की चाहने वाला व्यक्ति पलायनवादी, कमजोर, खोखला होता है। तरक्की के लिए साहब को खुश करने में लीन व्यक्ति स्वाभिमानहीन होता है।

शामनाथ ने और तरक्की की कामना से चीफ को अपने घर दावत पर आमंत्रित किया है। आमंत्रित सभी अफसर भारतीय अर्थात देसी हैं जबकि चीफ अमेरिकी। सभी अफसरों की निगाह चीफ की ओर यानी अमेरिका की ओर है। चीफ को खुश करने के लिए यह जरूरी है कि उसकी रुचियों और इच्छाओं को संतुष्ट किया जाए। इसके लिए चीफ के सभ्यता में ढलना जरूरी है, चीफ के जीवन-शैली को अपनाना आवश्यक है। लेकिन चीफ जैसे चालाक और जटिल व्यक्तित्व को समझा पाना शामनाथ जैसे लोगों के लिए असंभव है। उसके उद्देश्य को समझ पाना बहुत ही मुश्किल है। वह तो ऊपरी दिखावे में ही संतुष्ट हो जाते हैं। सवाल उठता है कि यह चीफ जो अमेरिकी है, वह भारत में क्या करने आया है। क्या वह कलाप्रेमी है या भ्रमणकारी संवेदनशील ? वह भारत में व्यापार करने आया है। अमरिकी कंपनी का अमरिकी चीफ है। शामनाथ जैसों की रोटी और ऐशो-आराम प्रदान करने वाला वही है। वह भारत में अपना माल बेचने आया है और शामनाथ जैसे लोग उसके माल को बिकवाने में उसकी मदद करते हैं, बदले में वह यहीं से कमाए हुए धन का एक छोटा-सा हिस्सा उन्हें देता है। शामनाथ जैसों को और धन चाहिए इसलिए वे उसको दावत देकर खुश करने की कोशिश करते हैं। एक व्यापारी को मेहमान के रूप में अपने घर में बुलाकर दावत देना अपने पैरों पर खुद कुल्हाड़ी मारना है। चीफ के विचार और व्यवहार को समझना इन देसी अफसरों की वश की बात नहीं है। चीफ देसी अफसरों का आराध्य है। वे चीफ से डरते भी हैं। चीफ, शामनाथ के घर जिस तरह से पेश आ रहा है, उस तरह से ऑफिस में पेश नहीं आता। लेखक लिखते हैं– "शामनाथ की पार्टी सफलता के शिखर चूमने लगी। वार्तालाप उसी रौ में बह रहा था, जिस रौ में गिलास भर जा रहे थे। कहीं कोई रुकावट न थी, कोई अड़चन न थी, साहब को व्हिस्की पसंद आई थी…. साहब तो ड्रिंक के दूसरे दौर में ही चुटकुले और कहानी कहने लगे थे। दफ्तर में जितना रोब रखते थे, यहां पर उतने ही दोस्त-परवर हो रहे थे।"[6] यानी दूसरे देसी अफसरों ने चीफ से ज्यादा पेग लिया था। ज्यादा शराब पीने के कारण वह अपने होशो-हवास खो बैठे थे जबकि चीफ अपने पूरे होशो-हवास में हैं, चुटकुले और कहानी सुना रहे हैं, क्योंकि "यह तो अमरीकी है।" नजदीक से भी उसके भावों और विचारों को पहचानना मुश्किल है।

अमेरिकी सभ्यता और संस्कृति के मोहपाश में आबद्ध मध्यवर्ग के लिए सिर्फ तरक्की, पदोन्नति और पैसा का ही महत्व है। मानवीय संबंध, रिश्ते-नाते उनके लिए बेकार की चीजें हैं। उन रिश्तों का भी उनके जीवन में तभी तक महत्व है जब तक वह उसकी तरक्की में सहायक है। अमेरिकी आकर्षण में कैद शामनाथ को अपनी माँ गंवार, कुरूप और असभ्य लगती है। उसके पिता की अस्वाभाविक मृत्यु के बाद इसी माँ ने उसे पढ़ाया-लिखाया ताकि वह बड़ा होकर अफसर बन सके। इस प्रयास में वह अपने साज-सिंगार, इच्छा-अनिच्छा, सुख-दुख सब भूल बैठी। बेटे की पढ़ाई में उसके सारे जेवर तक बिक गए। ऐसी माँ पर बेटे को गर्व होना चाहिए था परंतु वही माँ आज अपने ही बेटे को "पहले से कुछ ही कम कुरूप नजर आ रही थी।"[7] जिस माँ की बदौलत आज बेटा समाज में सिर उठा कर चल रहा है। वही बेटा उसे दूसरों की नज़रों से छिपाना चाहता है क्योंकि उसके दिख जाने से उसके इज्जत पर बट्टा लग जाएगा—

"माँ, आज तुम खाना जल्दी खा लेना। मेहमान लोग साढ़े सात बजे आ जाएंगे।

माँ ने धीरे-से मुंह पर से दुपट्टा हटाया और बेटे को देखते हुए कहा, "आज मुझे खाना नहीं खाना है, बेटा, तुम तो जानते हो, माँस-मछली बने तो मैं कुछ नहीं खाती।"

"जैसे भी हो, अपने काम से जल्दी निबट लेना।"

"अच्छा, बेटा।"

"और माँ, हमलोग पहले बैठक में बैठेंगे। उतनी देर तुम यहां बरामदे में बैठना फिर जब हम यहां आ जाएं, तो तुम गुसलखाने के रास्ते बैठक में चली जाना।"

माँ अवाक् बेटे का चेहरा देखने लगी। धीरे-से बोली, अच्छा बेटा।"

"और माँ आज जल्दी सो नहीं जाना। तुम्हारे खर्राटे की आवाज दूर तक जाती है।"

माँ लज्जित-सी आवाज में बोली, "क्या करूँ, बेटा, मेरे बस की बात नहीं है। जब से बीमारी से उठी हूं, नाक से सांस नहीं ले सकती।"[8]

मगर वह माँ है, परंपरित माँ, भारतीय माँ जो हर कष्ट और अपमान सहकर भी अपनी औलाद की तरक्की चाहती है लेकिन "सात बजते-बजते माँ का दिल धक्-धक् करने लगा। अगर चीफ सामने आ गया और उसने कुछ पूछा तो वह क्या जवाब देगी। अंग्रेज को तो दूर से ही देख कर घबरा उठती थी, यह तो अमरीकी है।... मगर बेटे के हुक्म को कैसे टाल सकती थीं। चुपचाप कुर्सी पर से टांगे लटकाए बैठी रही।"[9] शाम साढ़े पाँच बजे बेटे ने उसे जिस तरह बिठाया था वह साढ़े दस बजे भी उसी तरह बैठी रहीं। आखिर में जब सारे अफसर अपने-अपने गिलासों में से आखिरी घूंट पीकर खाना खाने के लिए उठे और बैठक से बाहर निकले, तो बाहर का दृश्य शामनाथ के लिए असह्य था, क्षण भर में ही उसका सारा नशा हिरन हो गया। लेखक लिखते हैं– "बरामदे में पहुंचते ही शामनाथ सहसा ठिठक गए। जो दृश्य उसने देखा उससे उनकी टांगें लड़खड़ा गई और क्षण-भर में सारा नशा हिरन होने लगा। बरामदे में ऐन कोठरी के बाहर माँ अपनी कुर्सी पर ज्यों-की-त्यों बैठी थी। मगर दोनों पांव कुर्सी की सीट पर रखे हुए और सिर दाएं से बाएं और बाएं से दाएं झूल रहा था और मुंह से लगातार गहरें खर्राटों की आवाजें आ रही थीं। जब सिर कुछ देर के लिए टेढ़ा होकर एक तरफ थम जाता, तो खर्राटे और भी गहरे हो उठते और फिर जब झटके-से नींद टूटती, तो सिर फिर दाएं से बाएं झूलने लगता। पल्ला सिर पर से खिसक आया था, और माँ के झरे हुए बाल, आधे गंजे सिर पर अस्त-व्यस्त बिखर रहे थे। देखते ही शामनाथ क्रुद्ध हो उठे। जी चाहा कि माँ को धक्का देकर उठा दे, और उन्हें कोठरी में धकेल दे, मगर ऐसा करना संभव न था, चीफ और बाकी मेहमान पास खड़े थे।"[10] एक बेटा का अपनी माँ के प्रति यह व्यवहार और उसकी सोच कितना क्रूर और अमानवीय है। माँ के प्रति देसी अफसरों की स्त्रियों की खिलखिलाहट और कहकहे भी आक्रोश पैदा करने वाली है। मगर हमारा पढ़ा-लिखा और तथाकथित सुसंस्कृत वर्ग कितना क्रूर और अमानवीय हो गया है। माँ मानो सबके लिए मनोरंजन की पात्र हो। अपनी ही जन्मदात्री पर हंसने वालों के प्रति शामनाथ के मन में न क्षोभ है और न आक्रोश ही फूटता है। दूसरी तरफ माँ पर यह बार-बार होती हंसी में कहीं-न-कहीं देसी अफसरों की तरक्की के लिए होड़ ही कारण है। लेकिन इस हँसी में चीफ शामिल नहीं है। माँ के प्रति वह अपनी संवेदना व्यक्त करता है– 'पुअर डियर' यहां आकर ऐसा लगता है कि चीफ सचमुच संवेदनशील है। पर हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि वह अमरिकी है, अंग्रेजों से भी ज्यादा नुकसानदेह। अंग्रेज तो दूर से ही पहचान में आ जाता था मगर यह तो नजदीक से भी पहचान में नहीं आता।

साहब ने स्थिति संभाल ली। वह माँ को नमस्ते करता है, उनसे हाथ मिलाता है। "साहब अपने हाथ में माँ का हाथ अब भी पकड़े हुए थे, और माँ सिकुड़ी जा रही थी। साहब के मुंह से शराब की बू आ रही थी।"[11] माँ के लिए माँस-मछली और शराब की गंध असह्य है। यह बात शामनाथ अच्छी तरह से जानता है, मगर इस समय माँ की पीड़ा से चीफ खुश होता है, तो वह वैसा भी करने को तैयार है क्योंकि उसे दूसरे देसी अफसरों से आगे निकलना है, तरक्की करना है। उसकी तरक्की तभी होगी जब चीफ खुश होंगे। उसकी तरक्की के मार्ग में चीफ की खुशी महत्व रखती

है, माँ की पीड़ा नहीं। दावत के वातावरण को देसी लोग बिगाड़ रहे थे, जिसे चीफ ने ठीक किया। लेखक लिखते हैं– "वातावरण हल्का होने लगा। साहब ने स्थिति संभाल ली थी।"[12] अर्थात् चीफ पूरे होशो-हवास में था। शामनाथ को अपनी माँ और देसी अफसरों पर मन ही मन बड़ा क्रोध आ रहा था। उसे लगता है कि उसकी काफी फ़ज़ीहत हो चुकी है इसलिए बचाव की मुद्रा में कहता है - "मेरी माँ गांव की रहने वाली है, उम्र भर गांव में रही है इसलिए आपसे लजाती है।"[13] यह सुनते ही साहब खुश हो जाते हैं और कहते हैं- "सच ! मुझे गांव के लोग बहुत ही पसंद है, तब तो तुम्हारी माँ गांव के गीत और नाच भी जानती होगी ?"[14] 'सच !' की ध्वनि आश्चर्यमिश्रित ख़ुशी की है, जैसे वह जिस चीज की तलाश में भारत आया था, वह अचानक और अनायास मिल गई हो। लेकिन जिस समय और जिस माहौल में चीफ यह कहता है– "तब तो तुम्हारी माँ गांव के गीत और नाच भी जानती होगी ?"[15] अत्यंत अपमानजनक है। लेकिन बेटे को माँ के अपमान, माँ की बेबसी से कोई मतलब नहीं है। उसे तो तरक्की चाहिए। तरक्की तभी मिलेगी जब चीफ खुश होंगे। फिर भी यहां यह संकेत तो मिल ही जाता है कि अगर चीफ माँ के नाच देखना चाहता तो बेटा माँ को नचवाने में भी संकोच नहीं करता क्योंकि उसे तो तरक्की चाहिए। लेकिन लेखक के लिए माँ का इतना अपमान असहनीय है। इसलिए वह केवल संकेत देकर छोड़ देता है।

"माँ, साहब कहते हैं, कोई गाना सुनाओ। कोई पुराना गीत, तुम्हें तो कितने ही याद होंगे।"

माँ धीरे-से बोली- "मैं क्या गाऊंगी, बेटा। मैंने कब गया है ?

"वाह, माँ! मेहमान का कहा भी कोई टालता है ?"

"साहब ने इतनी रीझ से कहा है, नहीं गाओगी, तो साहब बुरा मानेंगे।"

"मैं क्या गाऊं, बेटा। मुझे क्या आता है?"

"वाह! कोई बढ़िया टप्पे सुना दो। दो पत्तर अनारां दे..."

देसी अफसर और उनकी स्त्रियों ने इस सुझाव पर तालियां पीटीं। माँ कभी दीन दृष्टि से बेटे के चेहरे को देखती, कभी पास खड़ी बहू के चेहरे को। इतने में बेटे ने गंभीर आदेश भरे लहजे में कहा- 'माँ!'

इसके बाद हां या ना का सवाल ही ना उठता था। माँ बैठ गई और क्षीण, दुर्बल, लरजती आवाज में एक पुराना विवाह का गीत गाने लगी।"[16]

सारे देसी अफसर शराब के नशे में चूर हैं जबकि चीफ पूरे होश में है। वह अपने व्यापारी वह रूप को प्रकट करता हुआ पूछता है- "पंजाब के गाँवों की दस्तकारी क्या है।"[17] शामनाथ जब उन चीजों का एक सेट भेंट करने की बात कहता है तो वह तत्काल इंकार करते हुए पूछता है- "नहीं, मैं दुकानों की चीज नहीं माँगता। पंजाबियों के घरों में क्या बनता है, औरतें खुद क्या बनाती हैं?"[18] प्रश्न उठता है कि क्या चीफ दस्तकारी का रसिया है? उसे पंजाबियों के घरों में बनने वाली दस्तकारी में क्यों रुचि है? दुकान की चीज क्यों नहीं चाहिए? ध्यान दें "यह तो अमेरिकी है।" व्यापारी किस तरह की चीजों में रुचि रखता है? मुनाफा कमाने वाली चीजों में ही न ! अंग्रेज हमारे देश का कच्चा माल ले जाकर उससे नई चीज बनाकर हमारे देश में बेचता था। यानी, कच्चा माल हमारा था और तकनीक उसकी। मगर "यह तो अमेरीकी है।" कच्चा माल, तकनीक दोनों हमारे होंगे और अमरिका उससे मालामाल होंगे। और अमेरिकी मोहपाश में बद्ध शामनाथ जैसे लोग इस बात को समझ नहीं पाते। चीफ पूछता है- "पंजाबियों के घरों में क्या बनता है, औरतें खुद क्या बनाती हैं? शामनाथ कहता है- "लड़कियां गुड़िया बनाती हैं, औरतें फुलकारियाँ बनाती हैं।"[19] चीफ की रुचि प्रौढ़ हाथों से बनी फुलकारियों में है। लेखक लिखते हैं- "साहब बड़ी रुचि से फुलकारी को देखने लगे। पुरानी फुलकारी थी, जगह-जगह से उसके धागे टूट रहे थे और कपड़ा फटने लगा था।"[20] फटी और पुरानी फुलकारी को चीफ 'बड़ी रुचि' से देखने लगे। फटी-पुरानी फुलकारी में इतनी रुचि है तो नयी फुलकारी कितनी रुचेगी? चीफ व्यापारी है एक व्यापारी की आंख किसी भी चीज को बाजारू नियमों के तहत आँकती है। जो चीज उसे जितना मुनाफा देगी, वह चीज उसके लिए उतनी ही कलात्मक और उपयोगी है। यानी, चीफ ने आँक लिया है कि इस चीज को बाजार में उतार कर मालामाल हुआ जा सकता है। सभी जानते हैं कि भारत गांवों में बसता है। यहां के गांव हुनर के स्रोत हैं। गांव में सृजन का अकूत भंडार है। अंग्रेज तो यहां की संपत्ति ले गए, जबकि यह अमेरिकी तो यहां का हुनर और तकनीक भी ले जा रहा है।

दावत के दौरान माँ की जो गत की गई, उसका उन पर जो असर पड़ा वह दिल दहला देने वाला है। लेखक लिखते हैं- "मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों में छलछल आँसू बहने लगे। वह दुपट्टे से बार-बार उन्हें पोंछती, पर वह बार-बार उमड़ आते, जैसे बरसों का बांध तोड़कर उमड़ आए हों। माँ ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े, भगवान का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की, बार-बार आंखें बंद कीं,

मगर आंसू बरसात के पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे।"[21] बेटे के व्यवहार से माँ अत्यंत आहत है फिर भी बेटे का बुरा नहीं चाहती, उसके चिरायु होने की भगवान से प्रार्थना करती है। माँ बेटे के भविष्य को अच्छा नहीं पा रही है। उसका मन हाहाकार कर रहा है मगर वह बेबस है। माँ को चीफ पर विश्वास नहीं है–"क्या तेरी तरक्की होगी? क्या साहब तेरी तरक्की कर देगा? क्या उसने कुछ कहा है?"[22] पहले प्रश्न में खुशी है दूसरे में आशंका है और तीसरे में आशंका का समाधान है। माँ अनपढ़ है, गंवार है, असभ्य है, मगर उस जटिल अमेरिकी चीफ को पहचानने में धोखा नहीं खातीं, जबकि वह पढ़ा-लिखा शहरी भद्र समाज उसे पहचानने में असमर्थ रहता है। अपने दुश्मन को ही अपना सबसे बड़ा दोस्त समझ बैठता है। माँ के प्रश्न के जवाब में शामनाथ कहता है-"कहा नहीं, मगर देखती नहीं, कितना खुश गया है। कहता था जब तेरी माँ फुलकारी बनाना शुरू करेगी तो मैं देखने आऊंगा कि कैसा बनाती हैं।"[23] जबकि वह तकनीक सीखने की चाल है चीफ की। फुलकारी भारतीय तकनीक और कला का प्रतीक है। आज का बाजार अमेरिका के इशारे पर चलता है। जो व्यक्ति अथवा देश तकनीक और कला के क्षेत्र के जितना समृद्ध होगा, वह उतना ही संपन्न होगा। अमेरिका ने तकनीक और कला को वैयक्तिक संपत्ति की कोटि में ला दिया है। वह दूसरे देशों की तकनीक और कला को अपने एकाधिकार में ले लेता है। भीष्म साहनी ने इस प्रवृत्ति को बहुत पहले ही पहचान लिया था और इस कहानी के माध्यम से इसकी संभावना व्यक्त की थी। अमेरिकी चीफ आज के बाजार की कार्य-पद्धति और रुझान का जीता-जागता रूप है।

निष्कर्ष

निष्कर्षत: कह सकते हैं कि आज विकसित और विकासशील दोनों ही देशों का एक बड़ा वर्ग अमेरिकी आकर्षण में भ्रमित हैं। अमेरिकीवाद (भौतिकतावाद) की अंधी दौड़ में मनुष्य मात्र एक आर्थिक मनुष्य और अतृप्त उपभोक्ता मात्र बनकर रह गया है। जीवन में सार्थकता के स्थान पर सफलता-तरक्की की खोखली चकाचौंध हावी है। परिवार, पारिवारिक संबंधों और समाज से धीरे-धीरे दूर जाते जड़ विहीन व्यक्ति मानसिक बेचैनी का शिकार है। इसका कारण यह है कि हम न तो परंपरा के प्रति आश्वस्त हैं और न ही आधुनिकता के प्रति। "मेरा यह कहना नहीं है कि हम शेष दुनिया से बच कर रहें या अपने आसपास दीवारें खड़ी कर लें। मैं यह जरूर कहता हूं कि पहले हम अपनी संस्कृति का सम्मान करना सीखें और उसे आत्मसात करें। दूसरी संस्कृतियों के सम्मान की, उसकी विशेषताओं को समझने और स्वीकार करने की बात उसके बाद ही आ सकती है, उससे पहले नहीं। मेरी यह दृढ़ मान्यता है कि हमारी संस्कृति में जैसी मूल्यवान निधियाँ हैं वैसी किसी संस्कृत में नहीं हैं। हमने उसे पहचाना नहीं है, हमें उसे अध्ययन का तिरस्कार करना, उसके गुणों की कम कीमत करना सिखाया गया है।"[24]

संदर्भ ग्रंथ -

[1] झा डी. एन, प्राचीन भारत एक रूपरेखा, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1997, पृष्ठ: 88
[2] थापर रोमिला, भारत का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995, पृष्ठ: 149
[3] फ्रीडमैन एल. थॉमस, ए मैनिफैस्टो फॉर द फास्ट वर्ल्ड, द न्यूयॉर्क टाइम्स, मार्च 28, 1999
[4] साहनी भीष्म, मेरी प्रिय कहानियाँ, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, संस्करण 2008, पृष्ठ: भूमिका
[5] वही, पृष्ठ: 22
[6] वही, पृष्ठ: 17
[7] वही, पृष्ठ: 16
[8] वही, पृष्ठ: 15
[9] वही, पृष्ठ:17
[10] वही, पृष्ठ: 18
[11] वही, पृष्ठ:19
[12] वही,
[13] वही,
[14] वही,
[15] वही,
[16] वही,
[17] वही, पृष्ठ: 20
[18] वही,

[19] वही,

[20] वही,

[21] वही, पृष्ठ: 21

[22] वही, पृष्ठ: 22

[23] वही,

[24] महात्मा गांधी, यंग इंडिया, 01.09.1921